प्रातः क्लास 11/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। यह 15 मिनिट वा आधा घंटा, पौना घंटा बच्चे बैठते हैं। बाबा भी 15 मिनिट बिठाते हैं कि अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह शिक्षा एक ही बार मिलती है। फिर कब नहीं मिलेगी। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे कि आत्माभिमानी हो बैठो। यह एक ही सद्गुरु कहते हैं। इसलिए कहा जाता है एक सद्गुरु तारे, बाकी सभी गुरु बोरे। वह निमित्त बनते हैं नीचे गिराने की अथवा विषय सागर में डूबने का रास्ता बताते हैं। वैश्यालय में ले जाने का रास्ता बताते हैं। मगरूरी कितनी है। भेंट करनी होती है। वह गुरु लोग क्या2 करते हैं। सद्गुरु क्या कहते हैं। उनमें कितना देहाभिमान है! यहाँ बाप तुमको देहीअभिमानी बनाते हैं। खुद भी देही है ना। समझाने लिए कहते हैं मैं तुम सभी आत्माओं का बाप हूँ। उनको तो देही बनकर बाप को याद करना नहीं है। याद भी वही करेंगे जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के भांति होंगे। भांति तो बहुत होते हैं ना नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह बातें बड़ी समझने और समझाने की हैं। परमपिता परमात्मा, तुम सभी का बाप भी है और फिर नॉलेजफुल भी है। आत्मा में ही नॉलेज रहती है ना। तुम्हारी आत्मा संस्कार ले जाती है। वही नॉलेजफुल है। वह बाप है, यह तो सभी मानते हैं। फिर दूसरी उसमें खूबी है जो उनमें ओरली नॉलेज है। बीज रूप है। जैसे बाप बैठ तुमको समझाते हैं तुमको फिर औरों को समझाना है। बाप मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है। फिर वह सत्य है, चैतन्य है। नॉलेजफुल है। उनको इस सारे झाड़ की नॉलेज है। और कोई को भी इस झाड़ की नॉलेज है नहीं। आयु का भी पता नहीं है। इनको मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ कहा जाता है। इनका बीज ... बाप, जिसको परमपिता-परमात्मा कहा जाता है। जैसे आम का झाड़ है तो उनका क्रियेटर बीज को कहेंगे ना। वह जैसे बाप हो गया; परंतु वह जड़ है, अगर चैतन्य होता तो उनको मालूम रहता ना मेरे से सारा झाड़ कैसे निकलता है; परंतु वह जड़ है। उसकी बीज नीचे बोया जाता है। यह तो है चैतन्य बीजरूप। यह ऊपर रहते हैं। तुम भी मास्टर बीजरूप बनते हो। बाप से तुमको नॉलेज मिलती है। वह है ऊँच ते ऊँच। पद भी ऊँच ...ते हो। स्वर्ग में भी ऊँच पद चाहिए ना। यह तो मनुष्य समझते हैं स्वर्ग में देवी-देवताओं का राज्य होता है। देवताओं की राजधानी में राजा-रानी, प्रजा, गरीब, साहुकार आदि यह सभी कैसे बने होंगे? देवी-देवताओं ... राजाई कैसे बनी? अभी तुम जानते हो आदि-सनातन देवी-देवता धर्म कैसे स्थापन हो रही है। कौन करते (हैं)? भगवान। मनुष्य की बुद्धि बिल्कुल तमोप्रधान, भ्रष्टाचारी होने कारण कुछ भी नहीं जानते। जो कुछ होता है ड्रामा के प्लैन अनुसार। सभी ड्रामा के वश हैं। बाप भी कहते हैं मैं ड्रामा के वश हूँ। मेरे को भी जो पार्ट (मि)ला हुआ है वही पार्ट बजाता हूँ। वह है सुप्रीम आत्मा। उनको सुप्रीम फादर कहा जाता है। और सभी को (क)हा जाता है ब्रदर्स। और कोई को फादर, टीचर, गुरु नहीं कहा जाता। वह सभी का सुप्रीम बाप है। सुप्रीम टीचर, सुप्रीम गुरु है। यह बातें भूलनी न चाहिए; परंतु भूल जाते हैं; क्योंकि नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार राजधानी स्थापन (हो)ती है ना। हरेक कैसे-2 पुरुषार्थ करते हैं, वह झट स्थूल में भी मालूम पड़ जाता है। यह बाप को याद करते (हैं) वा नहीं। देहीअभिमानी हैं वा नहीं। यह नॉलेज में तीखा है, एक्टिविटी से समझा जाता है। बाप कोई को (डायरैक्ट) कुछ कहते नहीं हैं। फंक न हो जाये। अफसोस में न पड़ जाये यह बाबा ने क्या कहा। और सभी क्या कहें बाप बता सकते हैं। फलाने-2 कैसी सर्विस करते हैं। सारा सर्विस पर मदार है। बाप भी आकर सर्विस करते ना। तुम समझ सकते हो। बच्चों को याद करना है बाप(पाप) आत्मा से पुण्यात्मा बनने। याद की सबजेक्ट ही (डिफी)कल्ट है। बाप योग और नॉलेज सिखलाते हैं। नॉलेज तो बहुत ही सहज है। बाकी याद में ही कई थिर... हैं। देह-अभिमान आ जाता है। फिर यह चाहिए, यह अच्छी चीज़ चाहिए, ऐसे-2 ख्याल आते हैं। बाप कहते हैं .... तो तुम वनवास में हो ना। तुमको तो अभी वानप्रस्थ में जाना है। फिर कोई भी ऐसी नहीं पहन सक...। अगर ऐसी कोई चीज़ दूँ, चीज़ होगी तो वह खींचेगी। शरीर भी खींचेगा। घड़ी-2 देह-अभिमान में ले आते हैं। इ.... मेहनत। मेहनत बिगर विश्व की बादशाही थोड़े ही मिल सकती है। मेहनत भी नम्बरवार पुरुषार्थ

अनुसार कल्प-2 तुम करते आये हो। करते रहते हैं। रिज़ल्ट प्रत्यक्ष होते जावेंगे। स्कूल में भी नम्बरवार ट्रांसफर होते हैं ना। टीचर समझ जाते हैं फलाने ने अच्छी मेहनत की है। इनको पढ़ने का शौक है। फीलिंग आती है। उसमें तो एक क्लास से ट्रांसफर हो दूसरे/तीसरे क्लास में जाते हैं। यहाँ तो यह एक ही बार पढ़ना होता है। आगे चल तुम जितना नज़दीक आते जावेंगे उतना ही सभी को मालूम पड़ता जावेगा। यह बहुत मेहनत करते हैं। ज़रूर ऊँच पद पावेंगे। यह तो जानते हो कोई राजा-रानी बनने हैं, कोई क्या बनने हैं। प्रजा भी तो बहुत बनते हैं। सारा एक्टिविटी से मालूम पड़ता है। यह देह अभिमान में कितना रहते हैं। इनका कितना लव है बाप से। बाप के साथ लव चाहिए ना। भाई-2 का नहीं। भाई-2 के लव से कुछ मिलना न है। वर्सा सभी को एक बाप से ही मिलता है। बाप कहते हैं बच्चे अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। मूल बात ही यह है। याद से ही ताकत आवेगी। दिन-प्रतिदिन बैटरी भरती जावेगी; क्योंकि ज्ञान की धारणा भी होती जाती है। तीर लगता जाता है। दिन-प्रतिदिन तुम्हारी उन्नति नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार होती रहती है। यह एक ही बाप, टीचर, सद्गुरु हैं, जो ही देही अभिमानी बनने की शिक्षा देते हैं। और कोई दे न सके। और तो सभी हैं देह अभिमानी। तो आत्माभिमानी की नॉलेज कोई मिलती नहीं है। किसको भी पता नहीं है। तुम बच्चे समझते हो बाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है, गुरु भी है। कोई मनुष्य बाप, टीचर, गुरु हो न सके। (हरे)क अपना-2 पार्ट बजा रहे हैं। तुम साक्षी होकर देखते हो। सारा नाटक तुमको साक्षी होकर देखना भी है। एक्ट भी करना है। बाप क्रियेटर, डायरैक्टर, एक्टर है ना। दुनिया का क्रियेटर, डायरैक्टर है। और एक्टर भी है। शिवबाबा आकर एक्ट करते हैं। सभी का बाप है ना। बच्चे अथवा बच्चियों को आकर वर्सा देते हैं। एक बाप (है), बाकी सभी आत्माएँ भाई-2 हैं। वर्सा एक से ही मिलता है। इस दुनिया की तो कोई भी चीज़ बुद्धि में नहीं आती है। बाप कहते हैं जो कुछ देखते हो यह सभी विनाश होना है। अभी तो तुमको घर जाना है। वह लोग ब्रह्म को याद करते हैं, ब्रह्म तो घर है ना। गोया घर को याद करते हैं। समझते हैं हम ब्रह्म में जाते हैं, ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। इसको कहा जाता है अज्ञान। मनुष्य मुक्ति-जीवनमुक्ति के लिए तो(जो) कुछ कहते हैं वह रांग। जो कुछ युक्ति रचते हैं सभी हैं रांग। राइट रास्ता तो एक बाप ही बताते हैं। बाप कहते हैं हम तुमको राजाओं का राजा बनाते हैं ड्रामा प्लैन अनुसार। कई कहते हैं हमारी बुद्धि में नहीं बैठता है, बाबा हमारा मुख लो। कृपा करो। बाप कहते हैं इसमें बाबा की तो कुछ करने की बात ही नहीं है। मुख्य बात है तुमको डायरैक्शन पर चलना है। बाप का ही राइट डायरैक्शन मिलता है। बाकी सभी मनुष्यों की है रांग डायरैक्शन; क्योंकि सबमें 5 विकार हैं ना। नीचे ही उतरते-2 रांग बनते जाते हैं। क्या-2 ऋद्धि-सिद्धि आदि करते रहते हैं। इन... कोई सुख नहीं है। तुम जानते हो यह सभी अल्पकाल के सुख हैं। इनको कहा जाता काग विष्टा समान सुख। सीढ़ी के चित्र पर बहुत अच्छी रीत समझाना है और झाड़ पर भी समझाना है। कोई भी धर्म वाले को तुम दिखा सकते हो। तुम्हारा धर्म स्थापक(स्थापन) करने वाला फलाने जगह आता है। क्राइस्ट फलाने टाइम आवेगा। जो और-2 धर्म में कनवर्ट हो गये हैं उनको ही यह धर्म अच्छा लगेगा। झट निकल आवेंगे। बाकी कोई को अच्छा नहीं लगेगा तो पुरुषार्थ ही कैसे करेंगे। मनुष्य मनुष्य को फांसी पर चढ़ाते हैं। तुमको तो आपे ही फांसी पर चढ़ना है। यह बड़ी मीठी फांसी है। आत्मा की बुद्धि का योग है बाप के तरफ। आत्मा को कहा जाता बाप को याद करो। फादर तो ऊपर रहते हैं ना। तुम समझते हो हम आत्मा हैं। हमको बाप को ही याद करना है। यह शरीर तो यहाँ ही छोड़ देना है। तुमको यह सारा ज्ञान है। तुम यहाँ बैठ क्या करते हो। (वाणी) से परे जाने लिए पुरुषार्थ करते हो। बाप कहते हैं सबको मेरे पास आना है। तो कालों का काल हो ग... ना। वह तो काल एक को ले जाते हैं। वह भी काल कोई है नहीं जो ले जाता है, यह ड्रामा में सब .... है। आत्मा आपे ही समय पर चली जाती है, यह बाप तो सभी आत्माओं को ले जाते हैं।

तो अभी तुम सभी का बुद्धियोग है अपने घर जाने लिए। शरीर छोड़ने को मरना कहा जाता है। शरीर खत्म हो गया आत्मा चली गई। तुम जानते हो जो आपे ही मरते हैं वह पद पाते हैं। बाकी तो अकाले मृत्यु सबको होना ही है। बाप को बुलाते भी ... इसलिए हैं कि बाबा आकर हमको इस सृष्टि से ले जाओ। यहाँ हमको रह(ना) नहीं है। ड्रामा के प्लैनअनुसार अब वापस जाना है। कहते हैं बाबा यहाँ अपार दुख है। अब यहाँ रहना न है। यह बहुत ही छी-2 दुनिया है। मरना भी ज़रूर है। सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। अब वाणी से परे जाना है। तुमको कोई काल नहीं खावेगा। तुम खुशी से जाते हो। काल तब खाता है जब जबरदस्ती पकड़ते हैं। शास्त्र आदि जो भी हैं, वह सभी हैं भक्ति मार्ग के। वह फिर भी भक्तिमार्ग में होंगे। यह बड़ी वण्डरफुल बातें हैं ड्रामा की। यह टेप, यह घड़ी, जो कुछ इस समय देखते हो वह सभी फिर होगा। इसमें मूँझने की कोई बात ही नहीं। वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी रिपीट का अर्थ ही है हूबहू रिपीट। अभी तुम जानते हो हम फिर से सो देवी-देवता बन रहे हैं। फीचर आदि सभी वही हैं। वही आत्माएँ हैं, फीचर्स भी वही होंगे ना। मनुष्य के 84 जन्म तो 84 फीचर्स होंगे। जो भी सभी फीचर्स हैं वही फिर बनेंगे। इसमें ज़रा भी फर्क नहीं पड़ सकता है। यह सभी समझने की बातें हैं। तुम जानते हो वह बेहद का बाप भी है, टीचर भी, सद्गुरु भी है। ऐसा कोई भी मनुष्य हो न सके। शंकराचार्य को कोई बाप नहीं कहेंगे। इनको तुम बाबा कहते हो। प्रजापिता ब्रह्मा कहते हो। यह भी कहते हैं मेरे से तुमको वर्सा नहीं मिलेगा। गांधी बापू जी प्रजापिता तो नहीं था ना। बाप कहते हैं इन बातों में तुम मूँझो मत। बोलो, हम ब्रह्मा को भगवान वा देवता नहीं कहते हैं। यह तो है ही पापात्मा। बाप ने बताया है बहुत जन्मों के अंत में, वानप्रस्थ अवस्था में मैं इनमें प्रवेश करता हूँ सारे विश्व को पावन बनाने लिए। झाड़ में भी दिखाओ, देखो एकदम पिछाड़ी में खड़ा है ना। अभी तो सभी तमोप्रधान, जड़-जड़ीभूत अवस्था में हैं। यह भी तमोप्रधान में खड़ा है। वही फीचर्स है। इस तमोप्रधान तन में बाप प्रवेश कर इनका नाम ब्रह्मा रखते हैं। नहीं तो तुम बताओ ब्रह्मा नाम कहाँ से आया। यह है पतित। वह है पावन। वह पावन देवता ही फिर 84 जन्म ले पतित मनुष्य बनते हैं। यह मनुष्य फिर देवता बनना है। मनुष्य को देवता बनाय फिर देवता सो मनुष्य बनेगा। यह वण्डरफुल बातें हैं। यह वह बनते हैं सेकण्ड में। वह फिर 84 जन्म ले यह बनते हैं। इनमें बाप प्रवेश कर पढ़ाते हैं। तुम भी पढ़ते हो। इनका भी घराना है। ल॰ना॰, राधे-कृष्ण के मंदिर भी हैं; परंतु यह किसको भी पता नहीं है राधे-कृष्ण पहले प्रिंस-प्रिंसेज़ हैं जो फिर ल॰ना॰ बनते हैं। यही बेगर टू प्रिंस बनेंगे। पेट से इतना बड़ा तो नहीं निकलेगा ना। बेगर टू प्रिंस, प्रिंस सो फिर बेगर बनते हैं। कितनी सहज बात है। 84 जन्मों की कहानी इन दोनों चित्रों में है। यह वह बनते हैं। युगल है इसलिए चार भुजा देते हैं। प्रवृत्ति मार्ग है ना। निवृत्ति मार्ग वाले तो कब यह ज्ञान दे न सके। उन्हों का पार्ट ही अलग है। वह तो सुख को मानते ही नहीं। उनको गुरु करना गोया नीचे जाना है। एक सद्गुरु ही तारे। बाकी डुबोने वाले तो वह अनेक गुरु हैं। उनमें भी तो नम्बरवन है स्त्री का पति गुरु। वह तो एकदम वैश्यालय में डुबो देते हैं। कितन(ा) अच्छी रीत समझाते हैं, फिर दैवीगुण भी चाहिए। स्त्री के लिए पति से पूछो वा स्त्री से पति के लिए पूछो तो झट बतावेंगे इनमें यह खामियाँ हैं। इस बात में यह तंग करते हैं या तो कहते हम दोनों ठीक चलते हैं। कोई किसको तंग नहीं करते हैं। दोनों एक/दो के मददगार हो चलते हैं। कोई तो एक/दो को गिराने की कोशिश करते हैं। बाप कहते हैं स्वभाव को अच्छी रीत बदलना पड़ता है। वह सभी है आसुरी स्वभाव। देवताओं का होता ही है दैवी स्वभाव। यह भी तुम जानते हो असुरों और देवताओं की युद्ध लगी नहीं है। असुर थे कलियुग में, देवताएँ थे सतयुग में। फिर दोनों युद्ध लगे, देवताओं ने जीता। यह तो हो नहीं सकता। पुरानी दुनिया और नई दुनिया के आपस में मिल कैसे सकते। बाप बैठ समझाते हैं यह गीता मनुष्यों ने बैठ बनाई है। पास्ट जो होकर गई है उनका बैठ लिखा है। इनको कहानियाँ कहेंगे। त्योहार आदि सभी यहाँ के हैं। द्वापर से

लेकर ही त्योहार मनाते हैं। सतयुग में नहीं मनाये जाते। यह सभी बुद्धि से समझने की बातें हैं। देह अभिमान कारण बच्चे बहुत प्वाइंट्स भूल जाते हैं। नॉलेज तो सहज है। 7 रोज़ में सारी नॉलेज धारण हो सकती है। पहले अटेन्शन चाहिए याद की यात्रा पर। तुम्हारी भट्ठी बनी, उसमें तो कोई फर्स्ट ग्रेड निकले, कोई सेकण्ड ग्रेड, कोई थर्ड ग्रेड। कोई तो भागन्ती हो गये फोर्थ ग्रेड में। फिर स्वर्ग में तो आवेंगे ही। बहुत कम ते कम पद पावेंगे। जिसको भी ज्ञान की टचिंग हुई है वे आवेंगे ज़रूर। सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी सारा घराना स्थापन होना है। थोड़ा भी परिचय दिया तो प्रजा में चले जावेंगे। ढेर प्रजा बनने की है। वज़ीर तो वहाँ होता ही नहीं। फिर द्वापर में शुरू होता है एक वज़ीर। अभी तो अनेक वज़ीर हैं। फिर नो वज़ीर होगा। ल॰ना॰ को वज़ीर की दरकार नहीं। आगे राजाओं को फिर एक वज़ीर होता था। अभी तो देखो ढेर वज़ीर हैं। रानी को कितने वज़ीर होंगे। पालिर्यामेंट है ना। सिर्फ अपनी बुद्धि से थोड़े ही काम करते होंगे। सभी राय छांट-2 कर लेते हैं। अभी यहाँ बाप क्या करते हैं। कोई लिखत पढ़ते हैं? कुछ भी नहीं। वह तो याद कर फिर पढ़ते हैं। गीता भी याद कर फिर बैठ सुनाते हैं। उनको बहुत होशियार समझते हैं। मुख्य है गीता। तुम्हारी बुद्धि में है गीता का भगवान बाप सर्व का सद्गति दाता है। ...ही सारी सृष्टि की सद्गति करते हैं। यहाँ बैठे तुम ब्राह्मण बच्चों द्वारा सर्व की सद्गति करते हैं। टीचर पहले से थोड़े ही सब बता देंगे। पढ़ने में टाइम तो लगता है। एक ही समय सब थोड़े ही पढ़ा देंगे। यह भी भल एक ही सबजेक्ट है; परंतु मेहनत है। इसमें पावन बनना होता है। और कोई भी सतसंग आदि में पावन बनने की बात नहीं रहती। सन्यासियों का तो मार्ग ही अलग है। उनमें नागे भी होते हैं वह अलग हैं। नागों के भी बड़े लश्कर होते हैं। जंगल में रहते हैं। इसमें सब मेल्स ही होते हैं। उन्हों के पास दवाइयाँ ऐसी होती हैं जो कर्म इन्द्रियों को निसता(निस्तेज) कर देते हैं। अभी तुम समझते हो यह भी ड्रामा में सब नूँध है। फिर यह सभी रिपीट होगा। तुमसे समझकर तो बहुत ही जाते हैं। फिर किसके तकदीर में जितना है। तुम सर्विस तो बहुत करते हो, अपने-2 ज्ञान और योगबल के अनुसार। इसमें योग का बल बहुत चाहिए। देहीअभिमानी चाहिए। मूल बात है देही अभिमानी बनना है। बाप मिला है घर ले जाने लिए। इस पतित दुनिया में अपार दुःख है। बाप इस पतित दुनिया से ले जाते हैं अपने घर। यहाँ का हिसाब-किताब चुक्तू कर सब नम्बरवार जावेंगे। तुम बच्चों को सारे झाड़ का भी मालूम पड़ गया है। मनुष्य कितने गपोड़े लगाते रहते हैं। बाप तो सच्ची बात सुनाते हैं। इस संगमयुग का भी अभी तुमको पता पड़ा है जबकि बाप पुरुषोत्तम बनाने आते हैं। यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, यह बुद्धि में रहना है। पुरानी दुनिया का अंत और नई दुनिया का आदि है। तो पुरुषोत्तम बनना ही है। मुक्ति में जावें तो भी पुरुषोत्तम, जीवनमुक्ति में जावें तो भी पुरुषोत्तम। यह नॉलेज आत्मा को मिलती है। आत्मा ही धारण कर संस्कार ले जाती है साथ में। हम सो का अर्थ भी बच्चों को समझाया है। वह लोग तो हम सो का अर्थ कितना लम्बा-चौड़ा कर देते हैं। तुम तो समझाते हो ओम अर्थात् आई एम आत्मा। हम बाप के संतान हैं। हम सो का अर्थ भी तुमको समझाना पड़े ना। हम सो ब्राह्मण फिर हम सो देवता फिर हम सो क्षत्रिय..... अभी हम ब्राह्मण बने हैं फिर हम देवता बनेंगे। यह तो खुशी की बात है। सारी नॉलेज तुम्हारी बुद्धि में अभी है। फिर यह प्रायःलोप हो जावेंगे। वहाँ यह मालूम हो फिर तो सुख की भासना ही न रहे। यही सोच रह जाये हम फिर नीचे गिरेंगे। बाप कहते हैं यह ज्ञान सारा प्रायःलोप हो जाता है। फिर तुम देवताएँ सुख में आ जाते हो। तो बहुत सहज। बाप फिर कहते हैं मुझे याद करो। अभी तो कोई भी सम्पूर्ण बना नहीं हैं। टाइम पर बनेंगे ना। अभी तो अजन बहुत काम चाहिए। ज्ञान में अच्छे हैं योग में बहुत कम हैं। योग का जौहर बड़ा अच्छा चाहिए। तब ही किसको ज्ञान का तीर लग सकता है। अच्छा, मीठे-2 रूहानी सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।